प्रधानमंत्री पद के लिए ताल ठोक रहे मोदी

सत्ता के लिए नंगे होकर नाचेंगे सभी लीडर

-मनोज कुमार झा

अब यह तय हो गया है कि भारतीय जनता पार्टी की ओर से नरेन्द्र मोदी ही प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार होंगे। लालकृष्ण आडवाणी को किनारे लगा दिया गया है। पहले यह चर्चा चली थी कि आडवाणी प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार होंगे और मोदी को गृह मंत्री बनाया जायेगा। पर मोदी समर्थकों ने भाजपा को हाइजैक कर लिया। आडवाणी की एक भी नहीं चल पा रही और भाजपा में मोदी के पक्ष में जिस तेज़ी से ध्रुवीकरण होता चला जा रहा है, उससे वह अब राजनीति से अन्यमनस्क दिख रहे हैं।

ऐसी ख़बरे हैं कि मई से मोदी दिल्ली में ज़्यादा वक़्त देंगे। इधर, कुछ मीडिया घराने और सर्वे का धंधा चलाने वाले मोदी के पक्ष में माहौल बनाने में लग गए हैं। इस तरह की सर्वे रिपोर्ट आ रही है कि मोदी न सिर्फ़ उत्तर के राज्यों में, बल्कि दक्षिण के राज्यों में भी लोकप्रिय हैं और उनकी लोकप्रियता लगातार बढ़ती ही जा रही है। पता नहीं, इन सर्वेक्षणों का क्या आधार है! मोदी तो उत्तर भारत में भी लोकप्रिय नहीं। उत्तर प्रदेश, बिहार और बंगाल जैसे राज्यों में क्षत्रपों का राज है। मुलायम, नीतीश और ममता से इस बात की कतई उम्मीद नहीं की जा सकती कि ये मोदी का साथ देंगे। मीडिया 2014 के लोकसभा चुनावों को मोदी बनाम राहुल के रूप में सामने ला रहा है। ज़ाहिर है, मोदी के सामने राहुल तो पिद्दी ही साबित होगे। लेकिन चुनावी समीकरण किसी भी हाल में दो-ध्रुवीय नहीं होंगे। ये तो बहु-ध्रुवीय होंगे और इसमें भाजपा अथवा उसके गठबंधन के लिये जीत की राह आसान नहीं दिखती। मुद्दा है नहीं। विकास का मुद्दा है तो यह सभी पार्टियों का मुद्दा होगा। मोदी के लिए यह कुछ स्पेशल नहीं होगा।

मोदी भाषण कला में उस्ताद हैं, कुछ-कुछ हिटलर की तरह। कॉरपोरेट के समर्थक हैं और कॉरपोरेट उनका समर्थक है। इस बीच जनता कहीं नहीं आती। वैसे भी, जनता राजनीति के पूरे परिदृश्य से ही गायब है। सभी दल चुनाव में उसका इस्तेमाल करते आये हैं। इस बार भी वह इस्तेमाल होगी।

इसी बीच, देश की परिस्थितियां लगातार विकराल होती जा रही हैं। कहीं भी अमन-चैन नहीं। अर्थव्यवस्था की हालत बहुत ही बुरी है। आर्थिक विकास पूरी तरह अवरुद्ध है। महंगाई सातवें आसमान से भी ऊपर चली गई है। आम जनता बेबस है। भीषण महंगाई और बेरोज़गारी। गहरी हताशा का दौर है। स्थितियां कुछ-कुछ वैसी ही बनती जा रही हैं, जैसी 30 के दशक में द्वितीय विश्व युद्ध

के समय जर्मनी की थी। पर वह एक अलग ही दौर था, जब विश्व राजनीति में नाजीवाद और फासीवाद का उभार हुआ था। भारत में अभी जो हालात हैं, उसमें नरेन्द्र मोदी चाहकर भी हिटलर नहीं बन सकते। गुजरात में लगातार तीसरी बार जीत दर्ज करने के बाद उन्हें लग रहा है कि वे इस देश के शासक बन जाएंगे। पर उनकी राह इतनी आसान नहीं है। उत्तर भारतीय राज्यों के क्षत्रप उनकी राह में इतनी मुश्किलें खड़ी करेंगे कि उन्हें बहुत ही बे आबरू होकर गुजरात तक ही महदूद होकर रहना होगा।

2014 के आम चुनाव में एक नये गठबंधन का उभार संभव है। हो सकता है कि इस गठबंधन में तथाकथित धर्मनिरपेक्ष यानी अल्पसंख्यक साम्प्रदायिकता का झंडा बुलंद करने वाले क्षत्रप वामपंथियों से मिलकर गठबंधन बना लें और अपने साथ जयललिता या उनके धुर विरोधी डीएमके प्रमुख को भी जोड़ लें, क्योंकि ये तो हवा का रूख देखकर पहलू बदलते हैं। जहां तक बंगाल की शेरनी ममता दीदी का सवाल है तो ये उस गठबंधन में कतई नहीं जा सकती; जिसमें लेफ्ट होगा। यही हाल दलितों की देवी मायावती का है। ये भी उस गठबंधन में शामिल नहीं हो सकती; जिसमें मुलायम हों। अलबत्ता, ये दोनों देवियां भाजपा के साथ जा सकती हैं। मराठा क्षत्रप शरद पवार क्या करेंगे, यह अनिश्चित है। इतना तो तय है कि ये कांग्रेस के डूबते जहाज पर सवारी करना नहीं चाहेंगे।

ऐसा लगता है, त्रिपक्षीय गठबंधन उभरेगा। कांग्रेस, भाजपा और अन्य इन्ही के बीच में रस्साकशी होगी।

ममता दीदी तो गुंडा राजनीति में वामपंथियों से जरा भी कम नहीं निकलीं। मज़दूर यूनियनों द्वारा दो दिन की राष्ट्रव्यापी हड़ताल के दौरान पश्चिम बंगाल में इन्होंने अपना रौद्र रूप दिखाया। मीडिया की आवाज़ को कुचलने में भी नये कीर्तिमान स्थापित कर रही हैं। इनकी जो एक जन-समर्थक छवि बनी थी, धूमिल हो चुकी है। इनके शासन में पश्चिम बंगाल की जनता को कोई राहत नहीं मिली। फ़र्क सिर्फ़ यह है कि पहले जहां सीपीएम के गुंडे जनता और अपने विरोधियों पर कहर ढाते थे, अब तृणमूल के गुंडे ऐसा करने में लगे हैं।

बिहार में नीतीश अपराधियों से हाथ मिलाकर शासन कर रहें हैं तो यूपी में अखिलेश यादव ने पूरा राज-काज गुंडों के भरोसे ही छोड़ रखा है। ऐसे में जनता के लिये कहीं कोई उम्मीद नज़र नहीं आती। लीडरान लूट-लूट कर अपनी तिजोरियां भर रहे हैं, स्विस बैंकों में देश से लूटा गया धन जमा हो रहा है। सभी लीडरों ने अपने लिए 'जन्नत' की व्यवस्था कर रखी है। अफ़सर तक 100-100 करोड़ लूट रहे हैं। कई बलात्कारी लीडर लोकसभा-राज्यसभा और विधानसभाओं की शोभा बढ़ा रहे हैं।

दूसरी तरफ, तथाकथित रिवोल्यूशनरी छोटे-छोटे गुटों में बंटे महज नारेबाज़ी कर यह समझ रहे हैं कि वे इतिहास के बहुत बड़े दायित्व का निर्वहण कर रहे हैं। हैरत है कि नारेबाजी से आगे जा ही नहीं पाते। स्टालिन उनके ईष्टदेव हैं। जनता को इनसे भी कोई उम्मीद नहीं, क्योंकि इनकी बातें उसकी समझ में नहीं आती।

जहां तक बुद्धिजीवियों, कलाकारों का सवाल है, ज़्यादातर तो बिके हुए हैं।

अदम गोंडवी साहब ने कहा है :

जनता को साफ पीने का पानी नहीं नसीब

रम पी के दुम हिलाते हैं फ़नकार वो अदीब।

इस तरह, कुल मिलाकर मामला संगीन होता चला जा रहा है। आने वाले दिनों में राजनीतिक अस्थिरता, अराजकता और आम जनता के लिये एक से बढ़कर एक मुसीबतों का दौर-दौरा रहेगा। ■

भारतीय लोकतंत्र का असली चेहरा : राजा भैया

-मनोज कुमार झा

उत्तर प्रदेश का बाहुबली पूर्व मंत्री रघुराज सिंह उर्फ़ राजा भैया आजकल मीडिया की सुखिर्यों में छाया हुआ है। प्रताप गढ़ जिले की पूर्व रियासत कुंडा के शासकों का यह वंशज अपने खूंखार कारनामों की वजह से पहले भी लगातार चर्चा में रहा है। इसे 'कुंडा का गुडा' भी कहा जाता है, पर इसकी शख्सियत ऐसी है कि महज गुंडा भर कह देना मुनासिब जान नहीं पड़ता। इसकी शख्सियत को बयां करने के लिये गुंडा शब्द बहुत ही छोटा, मामूली लगता है। एक ऐसा शख़्स जो मगरमच्छ पालता हो और अपने विरोधियों को जिंदा मगरमच्छ का चारा बनने के लिये तालाब में छोड़ देता हो, विरोध में खड़े होने वाले को जिसके गुंडे दिन-दहाड़े पीट-पीट कर मार डालें, क्या वह सिर्फ़ वह एक गुंडा है?

इसे गुंडा किसने कहा था? कल्याण सिंह ने। और 'कुंडा का गुंडा' कहने के ठीक सात महीने बाद ही उन्हें इस शख़्स को अपने मंत्रिमंडल में शामिल करना पड़ा। यह लगातार निर्दलीय जीतता रहा है और सूबे में चाहे जिस पार्टी की सरकार हो, अपने इलाके में इसी की सरकार रहती आई है। इसके खिलाफ कोई मुंह खोल नहीं सकता और अगर किसी ने इसकी मुख़ालफ़त की तो उसका हस्र वही होगा जो डीएस पी ज़ियाउल हक का हुआ, जिसे लेकर यूपी में अभी बवाल मचा हुआ है और अखिलेश को सूझ नहीं रहा कि करें तो क्या करें। लगता है, मुलायम को भी सांप सूंघ गया है। मौका देखकर राहुल भैया भी प्रतापगढ़ तक दौड़ लगा आए और डीएसपी की विधवा को ढाढस बंधा आए। इससे ज़्यादा वे कुछ कर नहीं सकते। सूबे में जब कांग्रेस की सरकार हुआ करती थी, एक ज़माने में जब स्व. वी.पी. सिंह यूपी के मुख्यमंत्री हुआ करते थे, तब भी राजा भैया के बाप-दादों की तूती बोलती थी, ये बात और है कि वे इनकी तरह खुलेआम गुंडागर्दी नहीं करते थे, पर राजा भैया की रगों में खून आखिर किसका बहता है। मृत डीएसपी के परिवारजनों का कहना है कि उसकी हत्या राजा

भैया ने करवाई, पर उनका कहना है कि अगर वे डीएस पी से नाराज़ होते तो उसका तबादला करा देते, हत्या क्यों कराते। गौरतलब है, पिछले एक साल में प्रतापगढ़ जिले में छः एसपी आए और गए। और राजा भैया के दरबार में जिसने हाज़िर नहीं बजाई, चाहे वो एस पी हो या कलक्टर, उसकी खैर नहीं। शायद ज़ियाउल हक़ ने भी राजा भैया के दरबार में हाज़िरी बजाना जरूरी नहीं समझा। मामला कुछ और भी रहा होगा। इतनी मामूली बात पर राजा भैया तबादला करा देते हैं,मर्डर नहीं कराते। वैसे, अब तक कितने मर्डर उन्होंने कराये होंगे, यह भी उन्हें शायद ही याद हो।

राजा भैया भारतीय लोकतंत्र के सच्चे स्वरूप को उजागर करते हैं। ऐसे ही लोग भारतीय जनतंत्र के असल प्रतिनिधि हैं। जनता की हैसियत क्या है इनके सामने। कुछ भी तो नहीं। जो इनकी जय-जयकार नहीं करेगा, मारा जायेगा। बड़े से बड़े अफ़सर की भी क्या औकात। मगरमच्छ पालने वाले ये मगरमच्छों के बाप ख़ुद को मुल्क की तक़दीर समझते हैं और जम्हूरियत से रोज ही जिनाह करते हैं। इनके आगे बेबस है आम आदमी। ये स्वयंभू हैं। ये जनता के लिये, भूख से रोज-ब-रोज मरती-मिटती जनता के लिये 'माई-बाप' हैं इनके दरबार से जो फैसला होता है, उसकी कहीं कोई अपील नहीं।

ये किसी कोर्ट-कचहरी-कानून को नहीं मानते। ये राजा हैं- राजा भैया। इस देश में जम्हूरियत है।

गया पोप आया पोप

क्या दे गया और क्या दे देगा

वैटिकन में नया पोप चुनने का दौर चल रहा है। दुनिया के सर्वाधिक विकसित देशों में कैथोलिक-ईसाई सम्प्रदाय के लोग़ों की बहुलता है और वहां का मीडिया पूरी तरह पोप के चुनाव पर केन्द्रित नज़र आ रहा है। आर्थिक रूप से अग्रणी अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड तथा पश्चिमी यूरोप के सम्पन्न देशों जैसे फ्रांस, जर्मनी, इटली इत्यादि में पोप के चुनाव को लेकर ऐसा जुनून पैदा किया गया है जैसे इसी पर संसार का भविष्य टिका हो। जैसे दुनिया में ध्यान देने योग्य कुछ और है ही नहीं। पुराने पोप बेनेडिक्ट के काल में कैथेलिक संसार को क्या मिला, इसकी कोई समीक्षा आम ईसाई के मतलब से भी नहीं की जा रही है। सिर्फ़ इस बात को उछाला जा रहा है कि जीवित रहते पोप की गद्दी छोड़ने वाले वे इतिहास में महज दूसरे व्यक्ति हैं। इस 'त्याग' के पीछे के रहस्य पर से पर्दा उठाने की जरूरत भी नहीं समझी जा रही, न वैटिकन द्वारा और न मीडिया द्वारा। कैथोलिक जनता के पैसे से वैभवपूर्ण राज्य करने वाले पोप की उस जनता के प्रति कोई जवाबदेही नहीं है।

नये पोप के चुनाव के नाम पर जो कुछ हो रहा है, उसमें भी आम ईसाई जनता की भागीदारी नहीं है। पोप एक सामन्ती संस्था है और इनके शीर्ष पद पर बैठने वाले का चुनाव भी वरिष्ठ सामन्तों (बिशप, कार्डिनल इत्यादि) द्वारा होता है। यह वरिष्ठ मठाधीश अपने अपने क्षेत्र में पड़नेवाले चर्चों धार्मिक संस्थानों, ईसाई धर्म-शिक्षा स्कूलों एवं अन्य चल अचल सम्पत्ति व प्रभाव के माध्यम से ईसाई जगत पर पोप के धार्मिक साम्राज्य की आवश्यकता पूरी करते हैं। सामन्ती होने के कारण यह एक बंद प्रणाली भी है, जिसके कार्यकलाप यदा-कदा ही सामने आ पाते हैं। आश्चर्य नहीं कि जनता में बढ़ते लाकतान्त्रिक मूल्यों के चलते पिछले दशकों में तमाम वित्तीय एवं यौन सम्बन्धी अनियमितताये इन संस्थाओं की उज़ागर होती रही हैं। इस दौरान जो भी पोप रहे उन्होंने पानी सिर से ऊपर जाने के बाद ही मुंह खोला। तब भी कोई ऐसी प्रणाली विकसित करने की जरूरत नहीं समझी गयी जो ऐसी अनियमितताओं को प्रकाश में ला सके। गुपचुप अपराध

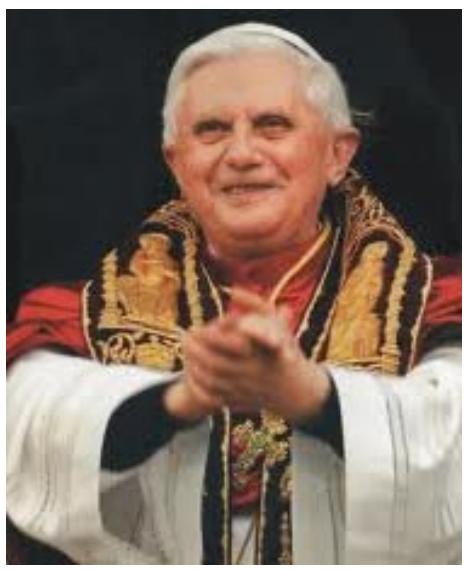

और गुपचुप निपटान का तौर-तरीका ही वैटिकन और पोप की नीति निर्धारित करता रहा है। पश्चिमी विकसित देशों का मीडिया सारी दुनिया को मानवाधिकारों का पाठ पढ़ाता आया है। उनका विशेष ध्यान इस पर होता है कि कहां गरीबी कहां कुपोषण, कहां भ्रष्टाचार, कहां अशिक्षा, कहां लैंगिक असमानता, कहां मानव तस्करी इत्यादि का बोलबाला है। पर जब धर्म का शोषक, परजीवी एवं ऐय्याश स्वरूप सामने आता है तो यही मीडिया इसे थोड़े बहुत में चलता करते देखा जाता है। यह भी कोई छिपा नहीं कि घोर अलोकतान्त्रिक एवं आपराधिक होते हुए भी धार्मिक संस्थायें अपने अपने समाजों के व्यवसायिक एवं सामरिक हितों का पोषण भी करती हैं। यहां उनके और मीडिया के हितों में समानता स्वत: स्पष्ट है। जब तक धार्मिक हित, व्यावसायिक हितों का पोषण करते रहेंगे, पोप का चुनाव मीडिया के लिये सर्वोपरि मुद्दों में से एक बना रहेगा। इसी दौरान पाकिस्तान के सिंध प्रान्त में एक धार्मिक उन्मादी समूह ने एक दलित-ईसाई बस्ती में आगजनी द्वारा वहां के निवासियों को उजाड़ फेंका। इन ईसाईयों को नये पोप के चुनाव से क्या मिल सकेगा, यह सोचने की बात है।